भारत सरकार

जल शक्ति मंत्रालय

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2771

जिसका उत्तर 12 दिसम्बर, 2024 को दिया जाना है।

.....

राष्ट्रीय जल पुरस्कारों का प्रभार

2771. श्री जनार्दन सिंह सीग्रीवालः

श्री हनुमान बेनीवालः

श्री अनूप संजय धोत्रेः

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः

क्या **जल शक्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में जल के विकास, संरक्षण और दक्ष प्रबंधन में राष्ट्रीय जल पुरस्कारों का क्या प्रभाव पड़ा है;

(ख) क्या उक्त पुरस्कार जल के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा कर रहे हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने जल की कमी का सामना कर रहे राज्यों के बीच जल संसाधनों का समुचित वितरण किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) राष्ट्रीय जल पुरस्कार दिए जाने के बावजूद भू-जल स्तर में लगातार हो रही कमी को रोकने में सरकार की विफलता के क्या कारण हैं?

उत्तर

जल शक्ति राज्य मंत्री श्री राज भूषण चौधरी

(क) और (ख): राष्ट्रीय जल पुरस्कार, सरकार के 'जल समृद्ध भारत' के विजन की सफलता के लिए देश भर के व्यष्टि और संगठनों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यकलापों और प्रयासों पर केंद्रित है। इन पुरस्कारों का उद्देश्य जल क्षेत्र में लोगों द्वारा किए गए अनुकरणीय कार्यों को मान्यता देना और अधिक से अधिक लोगों को जल संरक्षण और जल प्रबंधन की दिशा में उत्साहित करते हुए कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। राष्ट्रीय जल पुरस्कार, राज्यों, जिलों, स्कूलों, सिविल सोसायटियों, ग्राम पंचायतों, शहरी स्थानीय निकायों, जल उपयोगकर्ता संघों, संस्थानों, कॉर्पोरेट क्षेत्र आदि सहित विभिन्न हितधारकों को देश में जल संसाधन प्रबंधन के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। राष्ट्रीय जल पुरस्कार न केवल उपलब्धियों का उत्सव मनाते हैं बल्कि जल संरक्षण में राष्ट्रव्यापी कार्रवाई करने के लिए प्रेरक के रूप में भी काम करते हैं और कुशल जल प्रबंधन को भारत के विकास की गाथा का अभिन्न अंग बनाते हैं।

वर्ष 2018 में शुरूआत से, राष्ट्रीय जल पुरस्कार आम जनता में जल संरक्षण, जल सुरक्षा और उसके कुशल प्रबंधन के प्रचार में सहायक रहे हैं। यह विभाग के "जल शक्ति अभियान" से जुड़े जल संरक्षण अभियान में बड़े पैमाने पर सामुदायिक स्तर की भागीदारी के माध्यम से जन आंदोलन के रूप में परिलक्षित हुआ है। इस अभियान के तहत 1.05 करोड़ से अधिक जल संरक्षण संबंधी कार्यकलाप पूरे किए जा चुके हैं, इनमें से लगभग 34 लाख कार्य, जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन से संबंधित हैं, 6.5 लाख कार्य पारंपरिक जल निकायों के नवीनीकरण से संबंधित हैं, लगभग 18.5 लाख कार्य पुन: उपयोग और पुनर्भरण संरचनाओं से संबंधित हैं और लगभग 39 लाख कार्य वाटरशेड विकास से संबंधित हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय जल पुरस्कार, समुदायों को सफलतापूर्वक एकजुट करने में मददगार है जिससे भूजल क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। वर्ष 2019 के बाद से, प्रत्येक वर्ष, अधिकांश भूजल निगरानी कुओं (रेंज 52% से 70%) ने पिछले दशक से अपने औसत स्तर की तुलना में बढ़ते जल स्तर को दर्शाया है। इसके परिणामस्वरूप, अति-दोहित मूल्यांकन इकाइयों में वर्ष 2017 में लगभग 17% की तुलना में वर्ष 2023 में 11% तक की उल्लेखनीय गिरावट आई है। जबकि वर्षा पैटर्न, प्रभावी निगरानी, संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के समर्थक कार्यों आदि जैसे विभिन्न अन्य कारकों ने जल संरक्षण और प्रबंधन में इन उपलब्धियों में योगदान दिया है, राष्ट्रीय जल पुरस्कार का योगदान सफल कार्यान्वयन के लिए जन-जागरूकता सृजन करने के रूप में रहा है।

(ग): जल राज्य का विषय होने के कारण जल संसाधनों के वितरण के लिए निर्णय संबंधित राज्यों द्वारा लिया जाना होता है। जल की अधिकता वाले बेसिनों से विभिन्न राज्यों में जल की कमी वाले क्षेत्रों में जल का अंतरण संबंधित राज्यों के बीच सहमति पर निर्भर करता है।

भारत सरकार द्वारा अधिशेष जल को जल की कमी वाले क्षेत्रों को अंतरित करने के लिए वर्ष 1980 में एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एनपीपी) तैयार की गई है। जल की अधिकता वाले बेसिनों से जल की कमी वाले क्षेत्रों को जल का भंडारण और अंतरण उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एनपीपी) तैयार की गई है ताकि सूखे के प्रभावों को कम किया जा सके और वार्षिक रूप से आने वाले बाढ़ द्वारा होने वाले विनाश को भी कम किया जा सके।

(घ): केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) पूरे देश में क्षेत्रीय स्तर पर प्रत्येक वर्ष चार बार भूजल स्तर की निगरानी करता है। भूजल स्तर में दीर्घकालिक उतार-चढ़ाव का आकलन करने के लिए, नवंबर 2023 के दौरान सीजीडब्ल्यूबी द्वारा एकत्र किए गए जल स्तर के आंकड़ों की तुलना नवंबर के जल स्तर के दस वर्षों (वर्ष 2013-2022) के दशकीय औसत से की गई है। जल स्तर संबंधी आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि देश में निगरानी किए गए लगभग 51.7% कुओं में भूजल स्तर में वृद्धि दर्ज की गई है।

जल राज्य का विषय होने के कारण, जल संसाधनों के संरक्षण सहित जल संसाधनों से संबंधित पहलुओं का अध्ययन, आयोजना, वित्तपोषण और निष्पादन राज्य सरकारों द्वारा स्वयं उनके अपने संसाधनों और प्राथमिकताओं के अनुसार किया जाता है। भारत सरकार की भूमिका जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही मौजूदा योजनाओं के संदर्भ में सहायक होने, तकनीकी सहायता प्रदान करने और कुछ मामलों में आंशिक वित्तीय सहायता देने तक सीमित है।

*****